www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

र्माण के क्रांतिकारी जनक—

कमाल पाशा

सम्पादकीय विभाग
शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार



लेखक—

श्री सत्यभक्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नव-निर्माण के क्रान्तिकारी जनक—कमाल पाशा

आधुनिक टर्की के निर्माणकर्त्ता मुस्तफा कमाल पाशा (सन् १८८१—१९३८) ने जब अपनी युद्धनीति के जोर से तुर्की के शत्रुओं को परास्त करके वहाँ पर प्रजातन्त्र शासन स्थापित कर दिया, तो सबसे पहले उन्हें यह आवश्यकता जान पड़ी कि तुर्की-जनता को राष्ट्र के नव-निर्माण के लिये प्रेरणा दी जाय। उस समय अधिकांश लोग युद्ध में भाग लेने के कारण थक चुके थे और आराम चाहते थे। सामाजिक और आर्थिक सुधारों के लिये उनमें विशेष उत्साह न था।

दूसरी बात यह भी थी कि तुर्की जनता इस्लाम की शिक्षाओं के कारण धार्मिक और सामाजिक प्रथाओं की दृष्टि से बड़ी रूढ़िवादी थी। वह इस सम्बन्ध में सबसे बड़ा निर्णायक मुल्ला और मौलवियों को ही समझती थी। ये धर्म-जीवी लोग सदैव और सर्वत्र प्रगति-विरोधी होते ही हैं। इसलिये वे लोगों को निरन्तर लकीर के फकीर बने रहने का उपदेश देते रहते हैं। प्राचीन प्रथाओं और रिवाजों में किसी तरह का परिवर्तन करना वे 'गुनाह' बतलाते हैं। इसलिये तुर्की में किसी प्रकार के सामाजिक या धार्मिक सुधारों की बात करना कठिन था। ऐसा करने वाले को निस्सन्देह जनता के क्रोध का शिकार बनना पड़ता।

कमालपाशा अपने देश वालों की इस धार्मिक कट्टरता को जानते थे तो भी उन्होंने अनुभव किया कि वर्तमान समय में तुर्की तब तक कभी उन्नति नहीं कर सकता और न आधुनिक विज्ञान तथा कला-कौशल में अग्रसर अन्य योरोपियन राष्ट्रों के मुकाबले में अपनी रक्षा कर सकता है, जब तक वह पिछड़े हुए विचारों, रहन-सहन और रीति-रिवाजों को त्यागकर समय के साथ चलने को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तत्पर न हो। वे वहाँ के रहन-सहन, वस्त्र, ढङ्ग, व्यवहार, शिष्टाचार आदि सब बातों को आधुनिक ढङ्ग का बनाना चाहते थे। यह कार्य राजनैतिक परिवर्तन की अपेक्षा भी कठिन था। कमाल जानते थे कि मुल्ला-मौलवी तथा उनके संकेत पर चलने वाली मूढ़ जनता उनका घोर विरोध करेगी।

इसलिये उन्होंने इस कार्य को बड़ी सावधानी से आरम्भ किया और सबसे पहले अपने अङ्ग-रक्षकों को तुर्की टोपी के स्थान पर एक विशेष प्रकार का टोप लगाने को दिया। इसके कुछ समय बाद उन्होंने समस्त सैनिकों को वैसे ही टोप बनवा दिये। जब तक यह परिवर्तन सेना तक ही सीमित रहा तब तक उस तरफ जनता ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया और न कोई विरोध किया। फिर जब वह काले सागर की तरफ भ्रमण के लिये गये तो उन्होंने एक स्थान पर भाषण दिया कि "अगर हम लोग सभ्य होना चाहते हैं तो हमको वैसे ही वस्त्र पहिनने चाहिये जैसे सभ्य देशों के निवासी पहिनते हैं।" वे स्वयं भी जहाँ कहीं गये टोप लगाकर ही गये। पर जनता ने इस बात को पसन्द नहीं किया और न इस परिवर्तन के लिये किसी प्रकार का उत्साह व्यक्त किया।

तब कमाल ने इस विषय में शक्ति से काम लेने का निश्चय किया और शासन-सभा में एक कानून पास करके तुर्की टोपी पहिनना नियम के विरुद्ध ठहरा दिया। दो दिन बाद पुलिस को हुक्म दे दिया गया कि जो कोई तुर्की टोपी पहिने दिखाई दे वह उससे छीन ली जाय। जिस किसी ने इसका विरोध किया वह गिरफ्तार कर लिया गया। जो किसान गाँव से आते थे नगर में पुलिस के सिपाही उनकी टोपियाँ उतार लेते थे और उनको नंगे सिर वापस जाना पड़ता था।

इस पर जनता में विरोध की लहर फैल गई। मुल्ला लोगों ने उनको खूब भड़काया। कई शहरों में लोगों ने सरकारी कर्मचारियों पर आक्रमण किया और पत्थर फेंके। शासन-सभा में नूरी पाशा ने इस कानून का विरोध किया। मुस्तफा कमाल ने भी सुधार करने का निश्चय कर लिया था और उसने क्रोध-पूर्वक कहा—"क्रान्ति का आधार खून होना चाहिये। जो क्रान्ति खून के आधार पर नहीं होती वह बहुत दिनों तक नहीं ठहर सकती। उसने नूरुद्दीन पाशा को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शासन-सभा से निकाल दिया और विरोध करने वालों को कड़ी सजायें दीं। विद्रोह शान्त हो गया और प्रत्येक तुर्क टोप लगाने लग गया।

यह एक ऐसे व्यक्तित्व की कार्य-प्रणाली का नमूना है जिसकी गिनती यद्यपि शिक्षा, विद्या तथा चरित्र की निगाह से सामान्य श्रेणी में ही की जा सकती है, पर जिसने कर्मठता, साहस और निःस्वार्थता के बल पर एक राष्ट्र का नव-निर्माण करके अपना नाम इतिहास में अमर कर दिया। वह एक सामान्य लकड़ी के व्यापारी का पुत्र था। बचपन में गरीबी और पिता के मर जाने के कारण उसकी शिक्षा-दीक्षा भी नहीं हुई। बड़ा होने पर जब उसे पढ़ने को बैठाया गया तो अपने अक्खड़ और लड़ाकू स्वभाव के कारण स्कूल में टिक न सका। फिर जब फौज में भर्ती हुआ तो कुछ ही समय में अन्य सिपाहियों और अफसरों की तरह शराब और स्त्रियों के फेर में पड़ गया। सैनिक योग्यता अथवा राजनीतिक ज्ञान की निगाह से भी वह बड़ी ऊँची श्रेणी का न था तो भी देश-प्रेम, जातीय-उत्थान की लगन होने के कारण और लगातार अध्यवसाय के फलस्वरूप वह सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान का अधिकारी बन गया और उसने तुर्की के उद्धार का वह काम सम्पन्न करके दिखा दिया जिसे लोगों ने असम्भव समझ रखा था।

भेड़ चराने वाले से सेनाध्यक्ष —

कमाल का पिता चाहता था कि उसे अपनी ही तरह लकड़ी का सौदागर बना दे। उसकी माँ जुबैदा उसे एक मौलवी बनाना चाहती थी। सबसे पहले उसे एक मस्जिद के मदरसे में भेजा गया था जहाँ उसे कुरान पढ़ाई गई। फिर वह एक छोटे स्कूल में पढ़ने को बैठा दिया गया जहाँ उसने पढ़ाई में साधारण उन्नति की।

इसी समय बाप की मृत्यु हो जाने से उसे अपने मामा के यहाँ रहना पड़ा। यहाँ वह अस्तबल की सफाई करता भेड़ें चराता और खेतों की देख-भाल करता। इससे उसमें स्वतन्त्रता का भाव बढ़ गया और स्वास्थ्य भी मजबूत हो गया। कुछ समय बाद वह अपनी मौसी की सहायता से स्कूल में दाखिल कर दिया गया। पर अपने स्वच्छन्द स्वभाव के कारण वहाँ शिक्षकों के अनुशासन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में रहना नहीं चाहता था और चाहे जब झगड़ने लग जाता था। इस पर एक दिन शिक्षक ने उसको बहुत पीटा और वह स्कूल को सदा के लिये छोड़कर चला आया।

इसके बाद वह अपने मामा की सलाह से सैनिक स्कूल में दाखिल होने को चला गया, क्योंकि यह काम उसकी रुचि के अनुकूल था और उस स्कूल में किसी तरह का खर्च भी नहीं लगता था। वहाँ जाकर मुस्तफा कमाल काफी तरक्की करने लगा। वहाँ भी वह दूसरे लड़कों से प्राय: अलग रहता था। जब अन्य लड़के उससे साथ रहने को कहते तो वह फौरन यही जबाव देता—"मैं तुम लोगों की तरह रहना नहीं चाहता। मैं कुछ और होना चाहता हूँ।" उस बारह-तेरह साल की आयु में ही न मालूम उसके भीतर कैसी महत्त्वाकांक्षा जागृत हो गई थी कि वह गरीब घर का होने और अभी तक भेड़ें चराने का काम करने पर भी अपने को औरों से श्रेष्ठ समझता था और सब जगह सर्वोच्च पदवी पर ही रहना चाहता था। ऐसी महत्त्वाकांक्षा मनुष्य को आगे तो बढ़ाती है, पर यदि वह नैतिक और चारित्रिक दृष्टि से उच्चकोटि का न हुआ तो उसमें अहङ्कार, द्वेष, ईर्ष्या आदि गुर्दुण भी पैदा कर देती है।

सैनिक-स्कूल की पढ़ाई कमाल ने प्रशंसनीय ढङ्ग से पूरी कर ली और सत्रह वर्ष की आयु में वह सैनिक-कालेज में भेज दिया गया। यहाँ पढ़ाई के अलावा उसे संसार और अपने देश की स्थिति का भी ज्ञान होने लगा। उसने देखा कि तुर्की का साम्राज्य अब अपनी आन्तरिक दुर्बलता के कारण लड़खड़ा रहा है। आस-पास के ईसाई राज्यों ने उसको चारों तरफ से घेर कर दबा रखा है और उसके एक-एक भू-भाग को हड़प जाने की योजना बना रहे हैं। तुर्की-सम्राट अब्दुल हमीद शक्तिहीन और ऐश-आराम में निमग्न व्यक्ति था। वह जितना विदेशियों से भयभीत हो रहा था उतना ही अपनी प्रजा से भी डरता रहता था। वह जानता था कि जनता उसके कुशासन से ऊब उठी है और नव-युवकों में योरोप के स्वाधीनता आन्दोलन के फलस्वरूप क्रांति की भावना घर करती जाती है। इसलिये उसने प्रत्येक नये विचार और सुधार के लिये रोक लगा दी थी और सब स्थानों में जासूस नियुक्त कर दिये थे। वह नागरिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिकारों की माँग को दबा देता था। जो लोग इन आदेशों का उल्लङ्घन करते थे उनको बिना बिचार के-जेलों में ठूँस दिया जाता था। अगर वे ईसाई होते थे तो उनको कतल कर दिया जाता था।

ऐसे अन्यायपूर्ण शासन का परिणाम निश्चित रूप से क्रान्ति होता है। हम आज प्रजातन्त्र शासन में भी अनेक दोष देख रहे है, उसमें आर्थिक भ्रष्टाचार की सम्भावना बहुत अधिक रहती है। पर प्रत्येक व्यक्ति अपने मन की बात को स्वतन्त्रतापूर्वक कह सकता है और मन में उत्पन्न हुए रोष के भाव को तीव्र से तीव्र शब्दों में प्रकट कर सकता है, इससे वहाँ सशस्त्र क्रांति की सम्भावना बहुत कम हो जाती है। इङ्गलैण्ड और अमरीका इसके उदाहरण हैं। पर जहाँ निरंकुश बादशाहों का शासन होता है या 'डिक्टेटरशिप (अधिनायकवाद) चलता है, वहाँ जन-भावनाओं को प्रकट करने का कोई अवसर नहीं मिलता और क्रान्ति का ज्वालामुखी प्रायः फूटा करता है।

यही दशा उस समय तुर्की में हो रही थी। तुर्की का साम्राज्य जो दो-तीन-सौ वर्ष पहले योरोप में दूर-दूर तक फैला था और जिसने आस-पास की अनेक जातियों को अपने आधीन कर लिया था अब अपनी आन्तरिक निर्बलता के कारण प्रतिपक्षियों का शिकार हो रहा था और वे उसके एक-एक अंग को छीनते-झपटते जाते थे।

जिस समय कमाल पाशा सैनिक कालेज में अध्ययन कर रहा था उस समय तुर्की के शासन की हालत ऐसी ही खराब हो रही थी और कालेज के विद्यार्थियों में भी क्रान्तिकारी विचार फैल रहे थे। जवानी के जोश में कमाल भी उस तरफ झुक पड़ा। महत्त्वाकाँक्षी और कल्पनाशील तो वह था ही, बस क्रान्ति करके विद्रोह का नेता बनने और सुल्तान के स्वेच्छाचारी शासन का अन्त करने का स्वप्न देखने लगा। इस प्रकार की कल्पनाओं में वह अपने को बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान देता था और तुर्की के भाग्य-विधाता के रूप में अनुभव करने लगता था। उसने फ्रांसीसी भाषा सीखी और फेथी नामक एक साथी के साथ रूसो और हाब्स की क्रान्तिकारी भावों से युक्त पुस्तकों को बड़े ध्यान से पढ़ने लगा। इङ्गलैण्ड के जान स्टुआर्ट मिल के नये आर्थिक विचारों को भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसने समझने की चेष्टा की। कालेज में ऐसे साहित्य को पढ़ने का निषेध था और जिसके पास ऐसी पुस्तकें मिलें उसको जेल की सजा दिये जाने का नियम था, तो भी वह इससे भयभीत नहीं हुआ और क्रान्ति के सम्बन्ध में उसके विचार दिन पर दिन दृढ़ ही होते गये।

सैनिक अफसर के रूप में---

बीस वर्ष की आयु में कमाल ने कालेज की पढ़ाई पूरी करली और वह सेना में एक छोटा लैफ्टीनैंट बन कर तुर्की की राजधानी कुस्तुनतुनिया में भेज दिया गया। अभी तक तो उसका जीवन सालोनिका और मोनास्टिर जैसे साधारण कस्बों में बीता था, पर जब वह कुस्तुनतुनिया के विशाल और चमक-दमक पूर्ण नगर में पहुँचा तो उसकी आँखें चकाचौंध हो गईं। अभी तक उसे जीवन का कोई अनुभव न था। उसने किसी श्रेष्ठ पारिवारिक वातावरण में रह कर सभ्यता, नीति, धर्म की कुछ भी शिक्षा नहीं पाई थी। उसकी माता जुबैदा अवश्य एक धार्मिक विचारों की स्त्री थी, पर कमाल उससे हमेशा लड़ता-झगड़ता रहता था और जब से सैनिक स्कूल में पढ़ने लगा तब से उन दोनों का सम्पर्क भी बहुत कम हो गया था। इस बीच उसकी माँ ने मुसलमानी धर्म के नियमानुसार एक धनी सौदागर से पुनर्विवाह कर लिया था। यह कार्य कमाल को पसन्द नहीं आया और उसने अपनी माँ से मिलना-जुलना भी छोड़ दिया। कालेज में भी वह अक्खड़पन का व्यवहार करता रहा जिससे किन्हीं उच्च विचार के व्यक्तियों से उसका सम्बन्ध स्थापित न हो पाया।

ऐसी अवस्था में जब वह कुस्तुनतुनिया के सर्वथा नये और आकर्षक वातावरण में पहुँचा तो उसकी जीवन-धारा एकदम परिवर्तित हो गई। वह शराबी, जुआरी और वेश्यागामी सैनिक की सङ्गति में पड़ गया और इन दुर्गुणों को सीखने लगा। सैनिक-जीवन में प्रायः इन बातों को अधिक दूषित भी नहीं माना जाता, क्योंकि वे लोग प्रायः अविवाहित और परिवार से पृथक रहने वाले होते हैं। नीति और धर्म की चर्चा वहाँ कदाचित ही होती है। पैसा भी दूसरे लोगों से ज्यादा मिलता है, शरीर में पूरी ताकत होती है, वासनाओं के नियं-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ऋण का कोई प्रश्न नहीं होता, बस, वे शीघ्र ही शराब और व्यभिचार जैसे दुर्गुणों में फँस जाते हैं।

पर कमाल का यह हाल दो-चार वर्ष ही रहा। उसके भीतर जो सर्वोच्च पद पाने और तुर्की का सुधार करने की महत्त्वाकांक्षा थी उसने फिर जोर पकड़ा और दुर्व्यसनों की तरफ से ध्यान हटाकर सेना में उच्च स्थान प्राप्त करने का प्रयत्न आरम्भ किया। उस देश की तत्कालीन परिस्थिति में छोटे-बड़े वंश या धनी-निर्धन के भेद से कोई खास अन्तर नहीं पड़ता था। वहाँ तो स्वेच्छाचारी शासन में जो व्यक्ति शक्तिशाली होता और साहस करके आगे बढ़ने के लिये जोर लगाता वही ऊँचा चढ़ सकता था। कमाल का जन्म यद्यपि एक साधारण ग्रामीण परिवार में हुआ था, पर इससे उसकी प्रगति में कोई बाधा नहीं पड़ी और आगामी परीक्षाओं में सफलतापूर्वक उत्तीर्ण होकर वह सन् १९०५ में सेना में कप्तान के पद पर जा पहुँचा।

'वतन' की सदस्यता और गिरफ्तारी—

कमाल एक सिपाही था, तो भी उसका विशेष आकर्षण राजनीति की तरफ था। उसने योरोप के स्वतन्त्रतावादी और क्रान्तिकारी लेखकों के जिन विचारों को पढ़ा था, उसके फलस्वरूप वह भी क्रान्ति का पक्षपाती बन गया था। इस प्रकार के विचार दूसरे अनेक सैनिक अफसरों में भी फैल रहे थे, क्योंकि सभी को यह अनुभव हो रहा था कि तुर्की का वर्तमान शासन अयोग्य और भ्रष्ट तरीके से चलाया जा रहा है, जिससे वह आस-पास के अन्य राष्ट्रों के मुकाबले में पिछड़ रहा है और वह दिन दूर नहीं कि योरोपियन देश उसको आपस में बाँटकर हड़प जायेंगे।

इस स्थिति को समझ कर सेना के अनेक छोटे दर्जे के अफसरों ने एक क्रान्तिकारी संगठन बनाया जिसका नाम 'वतन' था। वास्तव में यह संस्था उसी समय से स्थापित की जब कि मुस्तफा कमाल सैनिक कालेज में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। उसके सदस्य तुर्की की तत्कालीन राजनैतिक तथा सामाजिक अवस्था की आलोचना करते थे और सुल्तान के शासन तथा उसके अत्याचारों के बहुत विरुद्ध थे। यह संस्था मौलवियों को भी बहुत निकम्मा और हानि-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कारक मानती थी, क्योंकि ये ही लोग उन पुरानी रूढ़ियों और परम्पराओं को कायम रखने वाले थे, जिनके कारण देश और जाति की उन्नति में बाधा पड़ती थी। उस समय तुर्की के तमाम कानून कुरान पर आधारित थे और उनका निर्णय मस्जिदों में जमा होने वाले मौलवी और मुल्ला करते थे। पर ये कालेज के नौजवान सैनिक विद्यार्थी, जिनको योरोपियन विचारों की हवा लग चुकी थी इसको बहुत बुरा समझते थे। उन्होंने प्रण किया था कि वर्तमान स्वेच्छाचारी शासन का अन्त करके जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों का पार्लामेन्टरी शासन स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे। वे लोग स्त्रियों की पराधीनता और पर्दा-प्रथा के विरुद्ध थे।

मुस्तफा कमाल ने अब सेना में कप्तान बनकर फिर से 'वतन' की कार्य-वाहियों को जारी किया। अब सरकारी आज्ञा से कालेज में उसे बन्द कर दिया था, पर वहाँ से पढ़कर सेना में काम करने वाले अफसरों ने उसके नये गुप्त केन्द्र स्थापित कर लिये। कमाल ने एक कमरा किराये पर लेकर उसमें 'वतन' का कार्यालय बनाया। वहाँ पर 'वतन' के सदस्यों की गुप्त बैठकें होती थीं जिनमें राष्ट्र की स्थिति पर विचार किया जाता था, साथ ही क्रांति द्वारा मौजूदा शासन को किस तरह लौटा जा सकता है, इस सम्बन्ध में भी तरह-तरह की युक्तियों पर परामर्श होता था। यह कार्य खतरनाक था और तुर्की जैसे स्वेच्छाचारी एकतन्त्र शासन वाले देश में राजविद्रोह की सजा बिना किसी प्रकार के मुकदमे के जेल में सड़ाकर मार डालना ही थी। मुस्तफा कमाल इस बात को खूब समझता था। इसलिये इस संस्था का सब काम बड़ी सावधानी से किया जाता था। नये सदस्यों की सचाई की विशेष उपायों से जाँच की जाती थी, बातचीत के लिये संकेत नियत किये गये थे और अपनी रक्षा के लिये कितने ही गुप्त स्थान बना लिये गये थे। कमाल इन सब कार्यों में काफी निपुण हो गये थे।

पर सरकारी पुलिस को इस सङ्गठन का पता था और वह समय-समय पर बड़े अधिकारियों को इसकी कार्यवाही की सूचना देती रहती थी। उच्च अधिकारियों ने आज्ञा दी कि उनके विरुद्ध पक्के प्रमाण इकट्ठे कर लिये जायें और उनको ऐसे समय गिरफ्तार किया जाय जब वे साजिश करने के लिये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इकट्ठे हुए हों। 'वतन' के सदस्यों में जोश अधिक पर होश कम था। इसलिये खुफिया पुलिस का एक व्यक्ति उनके सङ्गठन में धोखे से सम्मिलित हो गया और उसने उनको गुप्त-मीटिंग करते हुए गिरफ्तार करा दिया।

इन गिरफ्तार होने वालों में कमाल भी था। उसके विरुद्ध पुलिस ने बहुत से सबूत इकट्ठे कर लिये थे। उसका अभियोग अधिक खतरनाक माना गया और इसलिये उसको अन्य सब लोगों से पृथक करके कालकोठरी में बन्द कर दिया गया। उसकी माता जुबैदा उससे मिलने को आई, पर उसे भेंट करने की स्वीकृति नहीं दी गई।

कमाल को समय-समय पर जाँच पड़ताल के अवसर पर बाहर निकाला जाता था और फिर उसी अँधेरी गन्दी कोठरी में बन्द कर दिया जाता था। जेल का जीवन अवश्य ही कठिन था, पर कमाल को इस बात का सन्तोष था कि वह अपने देश और जाति के लिये कष्ट सहन कर रहा है। निरंकुश शासकों को हटाने के लिये कुछ लोगों को बलिदान लिये तैयार होना ही पड़ता है। स्वतन्त्रता देवी कष्ट-सहन और रक्त-दान के बिना प्रसन्न नहीं होती।

पर अकस्मात् स्थिति में परिवर्तन हुआ। एक दिन वह इस्माईल हकी पाशा के दफ्तर में बुलाया गया। उसने कहा—"तुमने अब तक सैनिक शिक्षा और कार्यों में बहुत योग्यता दिखाई है और तुम सचाई के साथ उस काम को करते रहो तो सरकारी सैन्य-विभाग में बहुत उन्नति कर सकते हो। पर तुमने ऐसा काम किया है जिससे तुम और तुम्हारी वर्दी कलङ्कित होती है। खराब साथियों में रहकर तुमने जुआ खेला है और शराब पी है। इससे भी अधिक दोष यह है कि तुम राजद्रोही बने! तुमने राजनीति में भाग लेकर अपने सुल्तान के विरुद्ध आन्दोलन किया और अपने साथियों को भी वैसा करने की प्रेरणा दी। फिर भी सुल्तान ने तुम्हारे ऊपर दया दिखाने का निश्चय किया है। तुम नौजवान और मूर्ख हो, शायद तुम खराब होने की अपेक्षा अधिक अक्खड़ और जङ्गली हो।

"तुम दमिश्क में घुड़सवारों की रैजीमेंट में नियुक्त किये जाते हो। तुम्हारा भविष्य वहाँ से प्राप्त हुई रिपोर्टों पर निर्भर होगा। तुमको अब यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मूर्खता बन्द कर देनी चाहिये और अपने सैनिक कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिये। ध्यान रहे तुमको दूसरा मौका नहीं दिया जायगा।"

उसी समय उसको बिना किसी से मिले सीरिया भेज दिया गया, जहाँ से उसके सैनिक दल को तुरन्त ही एक पहाड़ी जाति के विद्रोह को दबाने के लिये कूच करना पड़ा। उस काम को पूरा करके वह दमिश्क आया तो फिर 'वतन' की शाखा उस नगर में खोलने का प्रयत्न करने लगा। वह हृदय से सच्चा क्रांतिकारी था जिसे किसी तरह की सजा और धमकी न दबा सकती थी। उसने देखा कि यहाँ के सभी नवयुवक अफसर सुल्तान के शासन से नाराज हैं और देश में क्रान्ति लाने के पक्ष में हैं। वह उनके सङ्गठन में लग गया और थोड़े ही समय में सेना का एक बड़ा भाग उसके पक्ष में हो गया। उसको कुछ अनुभवी लोगों ने सलाह दी कि क्रांति का सबसे अधिक जोर 'बाल्कन-प्रदेश' में है, इसलिये उसको सालोनिका जाकर काम करना चाहिये। वह छुट्टी लेकर और वेष बदलकर सालोनिका जा पहुँचा और अपनी माँ के मकान में छुपकर क्रांतिकारियों का सङ्गठन करने लगा।

पर खुफिया पुलिस ने यहाँ भी उसका पता लगा लिया और कुस्तुनतुनिया से उसके नाम वारन्ट आ गया। परन्तु सालोनिका का पुलिस अधिकारी जेमिल स्वयं 'वतन' का सदस्य रह चुका था। उसने कमाल को सूचना दे दी कि वह दो दिन के भीतर यहाँ से भाग जाय। वह तुरन्त वहाँ से चलकर यूनान आया और वहाँ से जाफा पहुँच गया। वहाँ भी उसकी गिरफ्तारी का हुक्म आ चुका था। पर यहाँ भी जो अफसर उसकी गिरफ्तारी का हुक्म लाया वह विरोधी विचारों का था। उसने कमाल को गाजा भेज दिया और सुल्तान के पास रिपोर्ट भेज दी कि इस 'हुक्म' में कोई गलती हो गई है, कमाल तो निरन्तर गाजा (सीरिया) में ही था। वहाँ अन्य सैनिक अफसरों ने भी इस बात का समर्थन कर दिया। इस प्रकार क्रांतिकारियों के संगठन के प्रभाव से इस बार वह बाल-बाल बच गया।

एक साल तक वह चुपचाप रहा, क्योंकि बड़े अधिकारियों को जो सन्देह हो गया था वह दूर हो जाना आवश्यक था। उसने अपना सैनिक-कर्त्तव्य इतने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिश्रम और सावधानी से पूरा किया कि वहाँ का सेनापति उससे प्रसन्न हुआ और उसने उसकी प्रशंसा की रिपोर्ट प्रधान सैनिक कार्यालय में भेज दी। फिर वह अपने तबादले की कोशिश करने लगा और अपनी चतुराई से सालोनिका ही जा पहुँचा।

उस समय सालोनिका में एक बहुत बड़ा क्रांतिकारीदल काम कर रहा था जिसका नाम 'यूनियन और प्रोग्रेस' था। सालोनिका में ऐसे बहुत से यहूदी रहते थे जो इटली की प्रजा थे। तुर्की की पुलिस न तो उनकी तलाशी ले सकती थी और न उनको गिरफ्तार कर सकती थी। इसलिये उक्त संस्था के सदस्य अपनी बैठकें यहूदियों के घरों में किया करते थे। कमाल भी उस संस्था में शामिल हो गया। यद्यपि वह संस्था अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर भी विचार किया करती थी, पर कमाल को उसमें रुचि न थी। वह एक तुर्क की हैसियत से अपने देश को विदेशियों तथा सुल्तान के पंजे से छुड़ाकर स्वतन्त्र और उन्नतिशील बनाना चाहता था। जब उसकी माँ को उसके गुप्त संस्था का सदस्य होने का हाल मालूम हुआ तो उसने कमाल को बुरा-भला कहा। पर वह उससे भी लड़ने लगा। किसी का हस्तक्षेप सह सकना उसकी प्रकृति के अनुकूल न था। इसलिये उसने अपने रहने को पृथक मकान ले लिया।

'यूनियन' में भी उसने जाना कम कर दिया क्योंकि वहाँ पर वह अन्य सदस्यों की अपेक्षा नया समझा जाता था और इसलिये उसके हाथ में किसी प्रकार के अधिकार न थे और न वह अपनी पसन्द का कोई कार्यक्रम उसके द्वारा पूरा करा सकता था। वह कोई अवसर ढूँढ़ रहा था जब कि क्रांति असली रूप में शुरू की जा सके और उसके द्वारा देश का कायाकल्प किया जा सके।

'यंग तुर्क दल' की क्रान्ति--

सन् १९०८ में तुर्की में एकाएक क्रांति की आग जल उठी। उसका प्रमुख नेता अनवर पाशा था। वह भी एक फौजी अफसर था और उसके विद्रोही-दल में अधिक संख्या सैनिक लोगों की ही थी। सुल्तान ने उसको दबाने के लिये कई सेनाएँ भेजीं, पर वे सब अनवर के साथ मिल गईं। सिपाहियों को बहुत दिनों से वेतन नहीं मिल रहा था, इससे वे असन्तुष्ट थे। कमाल कुछ समय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तक तो क्रांति से अलग रहा, क्योंकि उसके सञ्चालकों पर उसे भरोसा न था और उसके अनुयायियों की संख्या बहुत कम थी। पर जब सरकारी कुप्रबन्ध और भ्रष्टाचार के कारण जनता और सेना स्वयमेव क्रांतिदल वालों का साथ देने लगीं तो कमाल भी उनमें सम्मिलित हो गया। जब सालोनिका के बड़े चौराहे पर खड़े होकर अनवर ने तुर्की के लिये नये शासन विधान की घोषणा की तो कमाल भी सैनिक अफसरों के साथ वहाँ था। यद्यपि इस समय क्रान्ति की बागडोर अन्य लोगों के हाथ में थी, तो भी जब देश की कायापलट का समय आ गया तो वह अलग नहीं रह सकता था। देशोद्धार के यज्ञ में प्रत्येक देशभक्त का आहुति डालना परम कर्त्तव्य था।

अब तुर्की के वे राजनीतिक नेता भी विदेशों से वापस आने लगे जिनको सुल्तान अब्दुल हमीद ने देश से निर्वासित कर दिया था। वे लोग सेना को लेकर राजधानी में पहुँचे और शासन-सत्ता को अपने हाथ में ले लिया। तुर्की की इस अव्यवस्था को देखकर पड़ोसी देशों ने भी लूट-मार आरम्भ कर दी। अस्ट्रिया ने बोसेनिया और हर्जीगोविना के प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। क्रीट के टापू को यूनान ने छीन लिया। बल्गेरिया रूस की सहायता से स्वतन्त्र हो गया। अल्बानिया और अरब में विद्रोह होने लगे।

इस प्रकार जिस साम्राज्य को तुर्की-सुल्तानों ने सैकड़ों वर्षों तक लड़-झगड़कर इकट्ठा किया था और जिसके निवासियों को अभी तक वे शक्ति द्वारा दबाकर रखे हुए थे, वह उस शक्ति के क्षीण होने से तीन-तेरह होने लग गया। इनमें से अधिकाँश देशों के निवासी ईसाई थे, जिनके साथ तुर्की शासकों का व्यवहार सदा पक्षपात और निर्दयतापूर्ण रहा था। अब अवसर पाकर वे विधर्मी मुसलमानों के बन्धन से छुटकारा पाने की कोशिश करने लगे और थोड़े ही समय में तुर्की साम्राज्य का बहुत-सा भाग दूसरे राज्यों के साथ मिल गया। कमाल इस स्थिति को ध्यानपूर्वक देख रहा था और उसके गुण-दोषों को परख रहा था। यद्यपि वह कट्टर तुर्क था और अपने देश को विदेशियों के प्रभाव से मुक्त करने का दृढ़ पक्षपाती था, पर अन्य धर्म वालों को पराधीन बनाना भी उसे उचित नहीं जान पड़ता था। इससे वह इन आपसी झगड़ों में ज्यादा नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पड़ा। दूसरी बात यह भी थी कि अभी तक क्रांतिकारी सरकार में उसका कोई भी न था। शासन-सञ्चालन पुराने बड़े नेता ही कर रहे थे, तीस वर्षीय कमाल को अभी 'बड़ी कमेटी' में स्थान नहीं मिला था।

इसके अतिरिक्त वह स्वभाव से ही अक्खड़ और किसी के भी दबाव को सहन न कर सकने वाला व्यक्ति था। कमेटी वालों की भी उसके सम्बन्ध में यही राय थी कि वह कार्य की दृष्टि से पर्याप्त योग्य है, पर अपने असहिष्णु स्वभाव के कारण दूसरों के साथ मिल-जुलकर काम नहीं कर सकता। उसमें प्रत्येक व्यक्ति की आलोचना करने का बड़ा दुर्गुण है।' इसलिये उन्होंने उसको केन्द्रीय शासन में न रखकर इधर-उधर के कामों में लगा दिया। सन् १९१० में वह जनरल अलीरजा के साथ सैनिक समझौता करने फ्रांस भेजा गया। वापस आने पर जनरल ने उसकी योग्यता और कर्त्तव्यपरायणता की बहुत प्रशंसा की। नई सरकार ने उसको सालोनिका के उसी सैनिक-स्कूल का अध्यक्ष बनाकर भेज दिया जिसमें उसने शिक्षा प्राप्त की थी।

देशरक्षा के लिये संघर्ष—

पर क्रांति हो जाने पर भी तुर्की की दशा में विशेष सुधार नहीं हुआ था। सुल्तान का स्वेच्छाचारी शासन हट गया था और पुराने दकियानूसी कानून भी बदल दिये गये थे, पर क्रांति के सञ्चालकों में कोई ऐसा महान् उद्देश्य वाला प्रतिभाशाली नेता न था जो अपना स्वार्थ छोड़कर केवल देशोद्धार के लक्ष्य में ही अपने को खपा दे। वहाँ पर अनवर, तालत, जमाल आदि जितने सैनिक नेता शासन कर रहे थे, वे सब एक-दूसरे को दबाकर स्वयं सर्वोच्च सत्ता हथियाने की फिकर में रहते थे। इसके फल से विदेशी लोगों का दाँव लग रहा था और वे वहाँ के शासन में हस्तक्षेप कर रहे थे। खास कर जर्मनी ने अपने बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ कुस्तुनतुनिया में काम करने को भेज दिये थे। वे वहाँ की सेना में भी अपना प्रभाव जमा रहे थे। वेतन, संगठन और सामान्य शासन की व्यवस्था में कोई सुधार नहीं हो सका था और देश में सर्वत्र असन्तोष व्याप्त था।

मुस्तफा कमाल भी अब सेना में एक बड़ा अधिकारी था और अन्य अनेक अफसर उसकी बातों को सुनते और मानते थे। अब वह स्वयं अपना एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दल बनाने लगा और अपने अनुयायियों को सङ्गठित करने लगा। शीघ्र ही इसकी खबर युद्ध-सचिव महमूद शौकत पाशा तक पहुँची। उसने कमाल को सालोनिका की सेना का सेनापति बनाकर भेज दिया। पर वहाँ भी वह अपने कार्यक्रम में सलग्न रहा। वह बन्द कमरों में गुप्त सभाएँ करने लगा। उसका कथन था कि "तुर्की तुर्कों के लिये है।" वह चाहता था कि देश में से विदेशियों के प्रभाव को समाप्त करके एक सुदृढ़ सरकार स्थापित की जाय। जासूसों ने उच्च सरकारी अधिकारियों को इन सब बातों की खबर दे दी। इस पर उसे सैन्य-सञ्चालन के कार्य से हटाकर सेना के दफ्तर में भेज दिया गया। वहाँ पर वह छोटे राजनीतिज्ञों से मिलकर अपने विचारों का प्रचार करने की कोशिश करने लगा, पर किसी ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। इससे वह बहुत असन्तुष्ट हुआ और राजनीति से पृथक होकर फिर पुराना खाने-पीने का जीवन बिताने लगा। फिर भी वह अवसर की खोज करता रहता था।

सन् १९११ में इटली ने तुर्की के अधीनस्थ 'त्रिपोली' देश पर आक्रमण कर दिया जो उत्तरी अफ्रीका में है। तुर्की सरकार ने उसे त्रिपोली पहुँचकर काम करने का आदेश दिया। पर जब वह मिश्र की सीमा पर पहुँचा तो मालूम हुआ कि अँगरेजों ने इस युद्ध में मिश्र को तटस्थ करार देकर आगे जाने का रास्ता बन्द कर दिया है। यह बात कमाल को बहुत बुरी लगी, क्योंकि मिश्र तुर्की के आधीन माना जाता था, पर अँगरेज वहाँ जबर्दस्ती हस्तक्षेप कर रहे थे। फिर भी उसने हिम्मत न हारी और वह अपने सब साथियों को छोड़कर एक अरब निवासी का-सा वेष बनाकर मिश्र में घुस गया। पर न तो वह अरबी भाषा ठीक तरह जानता था और न उसकी आँखें और बाल अरबों की तरह थे। इससे वह शीघ्र ही पहिचान लिया गया। वह हर तरह का खतरा उठाते हुए बढ़ता गया और अन्त में तुर्क सेना के कैम्प में पहुँच गया। वहाँ सैन्य-संचालन करते हुए वह एक वर्ष तक इटली वालों से युद्ध करता रहा। पर उनकी बहुत बड़ी सेना के कारण उसे अधिक सफलता न मिल सकी।

कुछ समय बाद बाल्कान के कई देशों ने मिलकर तुर्की पर चढ़ाई करदी। अब तुर्की को अपनी जान बचाना कठिन हो गया और इस कारण उसने अपनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दूर देशों में फैली हुई सेना को वापस बुलाकर घर की रक्षा करने का प्रयत्न किया। मुस्तफा कमाल भी कई देशों का चक्कर खाकर कठिनाई से कुस्तुनतुनिया पहुँचा। वहाँ पर उसने देखा कि देश की हालत बहुत खराब है और तुर्की सेना चारों तरफ हारती जाती है। राजधानी घायलों से भरी हुई थी और अस्पतालों में जगह न होने से मस्जिदों तथा गिरजों में अस्थायी अस्पताल बनाकर घायलों को रखा गया था। खाने के पदार्थों का अकाल पड़ गया था और हजारों व्यक्ति भूखों मर रहे थे। हैजा भी फैल गया था और वह भी हजारों व्यक्तियों की भेंट ले रहा था। इससे तुर्की सरकार की हालत डाँवाडोल हो रही थी।

ऐसे अवसर पर मुस्तफा कमाल तुर्की के राजनीतिज्ञों के भीतरी झगड़ों में न पड़कर देश-रक्षा के लिये युद्ध-क्षेत्र में पहुँचा और एक सेना की अध्यक्षता ग्रहण कर बल्गेरिया वालों का सामना करने लगा। पर तुर्की की दशा दिन पर दिन कमजोर होती जाती थी इसलिये उसे विशेष सफलता न मिल सकी। उधर कई राजनीतिज्ञ देश का बहुत-सा भाग शत्रुओं को देकर सन्धि करना चाहते थे। अनवर पाशा सबको दबाकर अपनी नीति के अनुसार काम करना चाहता था। उसने सेना के नवयुवक अफसरों को मिलाकर कितने ही पुराने अधिकारियों को गोली से उड़वा दिया और स्वयं लड़ने लगा। पर शत्रुओं की अधिकता के कारण तुर्की वालों को बीच में सामान्य जीत हो जाने पर भी अंत में हारना ही पड़ा और देश का बहुत-सा भाग उनके अधिकार से निकल गया।

वह जमाना ऐसी ही उथल-पुथल का था। न किसी व्यक्ति के हाथ में सत्ता के रहने अथवा चले जाने का भरोसा था और न विदेशों के आक्रमण और मित्रता का। चारों तरफ राजनीतिक चालें चली जा रही थीं, उनमें जहाँ किसी से चूक हुई कि फिर उसका ठिकाना नहीं लगता था। आज जिसको लोग झुक-झुककर सलाम करते थे, हर बात में 'जी हाँ'-'जी हाँ' की धुन लगा देते थे, कल उसके दरवाजे पर आने पर भीतर घुसने भी नहीं देते थे। सब अपने-अपने स्वार्थ में मतवाले हो रहे थे और किसी तरह अपनी ताकत बढ़ाना चाहते थे। पर उस समय हालत इतनी तेजी से बदल रही थी और संसार के राजनीतिक क्षेत्र में ऐसे दाव-पेच चले जा रहे थे कि किसी के स्थायित्व का कोई ठिकाना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

न था। क्षण भर में राजा और क्षण भर में भिखारी की कहावत स्पष्ट रूप से चरितार्थ हो रही थी। तुर्की की जनता में सैकड़ों वर्षों से निरंकुश शासन के नीचे रहने के कारण राजनीनिक चेतना का अभाव था। वह जिसको सत्तारूढ़—शक्तिशाली देखती उसी का अनुसरण करने लग जाती थी।

उस समय अनवर पाशा का सितारा बुलन्दी पर था और वह धीरे-धीरे ऊपर उठते हुए अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुका था। जर्मनी की सरकार उससे मित्रता का भाव रखती थी और उसे आगे बढ़ाने में हर तरह की सहायता देने को प्रस्तुत थी। इसके विपरीत मुस्तफा कमाल तुर्की में विदेशियों का प्रवेश हानिकारक मानता था और जर्मनों को घृणा की दृष्टि से देखता था। अनवर पाशा के साथ मतभेद और कहा-सुनी होने का मुख्यतः यही कारण था। बाल्कन के झगड़े में तुर्की की कमजोरी देखकर अनवर ने सेना का पुनः सङ्गठन करना आवश्यक समझा और इस कार्य के लिये सलाह-मशविरा देने और सेना की नवीन व्यवस्था को जमा देने के लिये जनरल वान सैन्डर्स को बुलाया। मुस्तफा कमाल को यह बात बहुत बुरी लगी कि अपनी सेना की बागडोर किसी विदेशी के हाथ में दे दी जाय। यद्यपि अनवर इस समय युद्ध-सचिव के पद पर काम कर रहा था और देश के शासन की बागडोर उसी के हाथ में थी, तो भी कमाल ने उसके काम की खुलकर आलोचना की और उस पर दोषारोपण किया। पहले तो उसने अनवर से मिलकर इन बातों को सामने ही कहने का प्रयत्न किया, पर जब उसने मिलने से इनकार कर दिया तब उसने इन्हीं सब बातों को लेकर एक बहुत कड़ा पत्र लिखकर उसके पास भेज दिया। अनवर इस पर नाराज हुआ और उसने उसको सोफिया (बल्गेरिया) के दूतावास में सहायक अधिकारी बनाकर तुर्की से दूर भेज दिया।

यद्यपि सोफिया में उसको बहुत काम करना पड़ता था, तो भी उसका मन नहीं लगता था। वह समझता था कि उसकी स्पष्टवादिता के कारण अनवर पाशा ने उसे तुर्की से निर्वासित कर दिय' है। उसने बल्गेरिया के सेनापति से मित्रता कर ली और कुछ नया काम करता रहा। वह परिश्रमी और कर्मठ व्यक्ति था और इस तरह निष्क्रिय रहना उसे बहुत नापसन्द था। पर तुर्की के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वर्तमान शासकों की नीति से मतभेद रखने के कारण विवश होकर उसे यही स्थिति स्वीकार करनी पड़ी।

प्रथम योरोपीय महासमर—

इसी समय १९१४ के अगस्त में योरोपीय महायुद्ध शुरू हो गया। कमाल की सम्मति थी कि इस अवसर पर तुर्की को तटस्थ रहना चाहिये। पर वहाँ के शासक बहुत पहले ही जर्मनी के साथ गुप्त-सन्धि कर चुके थे और लियान वान सैण्डर्स इसके लिये दो वर्ष से निरन्तर वहाँ की सेना को नये रूप में सङ्गठित कर रहा था। इसलिये युद्ध को अनिवार्य देखकर कमाल उसमें भाग लेने के लिये उतावला होने लगा और उसने अनवर पाशा को इसके लिये तार भेजा, पर उसका यही उत्तर मिला कि 'अभी अपने स्थान पर ही बने रहो।' उसने अपने मित्रों के लिये भी कई पत्र लिखे पर कोई इस विषय में उसकी सहायता न कर सका।

आरम्भ में कितने ही लोगों का यह खयाल था कि युद्ध एक-दो महीने में खत्म हो जायगा। पर जब छः महीने बीत गये और युद्ध घटने के बजाय बढ़ता ही चला गया तो कमाल बेचैन होने लगा और उसने बल्गेरिया से चलने की तैयारी कर ली। इसी समय उसके पास कुस्तुन्तुनिया से बुलाने का आज्ञा-पत्र आ गया। इस समय अनवर पाशा रूस की सेना से लड़ने के लिये काकेशश की तरफ चला गया था और उसके स्थान पर हकी पाशा काम कर रहा था। वह कमाल की योग्यता से भलीभाँति परिचित था। इसलिये जब अँगरेजों के गैलीपोली पर सम्भावित आक्रमण को रोकने के लिये नये सेनादल का सङ्गठन किया जाने लगा तो उसने कमाल को बुलाकर जर्मन सेनाध्यक्ष लियान वान सैण्डर्स का सहकारी बना दिया।

अब संयोग ऐसा बना कि दो ऐसे व्यक्तियों को जो एक-दूसरे के विरुद्ध विचारधारा वाले थे एक साथ मिलकर काम करना अनिवार्य हो गया। वान सैण्डर्स तुर्की अफसरों को बहुत अयोग्य और घटिया मानता था और इधर कमाल को विदेशियों से घृणा थी। पर वान सैण्डर्स ने शीघ्र ही अनुभव कर लिया कि मुस्तफा कमाल तुर्की के अन्य अफसरों से बहुत भिन्न है और वह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पक्का सिपाही और कर्त्तव्य में दक्ष है। उसके स्वभाव में अक्खड़पन का भी उसे अनुभव हो गया, क्योंकि एक दिन कमाल ने उसके सामने ही कह दिया कि युद्ध में जर्मनों की अन्तिम विजय होना कठिन है। पर वान सैण्डर्स उसकी विशेषताओं को समझ चुका था और उस पर विश्वास रखता था। कमाल भी सैण्डर्स की वीरता और चतुराई को मानता था। एक बार उसने कहा—"वान सैण्डर्स में एक उच्च सेनाध्यक्ष के समस्त गुण हैं। यद्यपि उसके साथ अनेक बार मेरा मतभेद हो जाता है, पर जब वह मुझे किसी काम की एक बार आज्ञा दे देता है, तो फिर उसका भार पूरी तरह मेरे ऊपर छोड़ देता है।"

जिस समय वान सैण्डर्स गैलीपोली की रक्षा की तैयारी कर रहा था, उसी समय खबर आई कि अङ्गरेज आक्रमण के लिये मिश्र से अस्सी हजार सेना जहाजों में ला रहे हैं। पर उस प्रदेश के बावन मील लम्बे किनारे पर वे कहाँ पर उतर पड़ेंगे इसका कोई निश्चय न था। इसलिये वान सैण्डर्स ने अपनी सेना को तीन भागों में बाँट कर तीन विभिन्न स्थानों पर नियुक्त कर दिया। मुस्तफा कमाल ने इस अवसर पर बड़ी बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का परिचय दिया और वह अङ्गरेजी सेना से ऐसी वीरतापूर्वक लड़ा कि उसने अङ्गरेजों के मुख्य आक्रमण को थोड़े से सिपाहियों को साथ लेकर अकेले ही रोक दिया। उसे महीनों तक खाइयों में रहना पड़ा जहाँ लगातार अँगरेजी तोपों के गोले पड़ते रहते थे, पर कभी भयभीत नहीं हुआ और बराबर आगे बढ़कर अपने सैनिकों का उत्साह बढ़ाता रहा। यद्यपि अब भी अनवर के साथ उसका झगड़ा होता रहता था, जिससे क्रुद्ध होकर उसने अपने पद से त्याग पत्र भी दे दिया। पर जर्मन सेनापति उसके महत्त्व को खूब समझ गया था। उसने अपने ऊपर जिम्मेवारी लेकर अनवर के हुक्म को अमान्य कर दिया और कमाल अपने स्थान पर बना रहा।

मुस्तफा कमाल को युद्ध में एक के बाद दूसरी सफलता मिलती गई और अन्त में अँगरेजी सेनाएँ गैलीपोली से हट गईं। इस पर जनता में कमाल का यश फैल गया और वह "डार्डेनैलीज और राजधानी के रक्षक' के नाम से पुकारा जाने लगा। पर अनवर से उसका झगड़ा बना ही रहा और उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उत्तर की तरफ रूस वालों का मुकाबला करने भेजा गया। उस कार्य में भी उसे सफलता प्राप्त हुई यद्यपि अब उसे 'पाशा' की पदवी प्राप्त हो गई थी तो भी वह अनवर के व्यवहार से अप्रसन्न था, जो कमाल के मतानुसार 'सस्ती राजनीति' के आधार पर टर्की का सर्वेसर्वा बना बैठा था और उसके मार्ग में हर तरह रोड़े अटका रहा था। अन्त में मामला यहाँ तक बढ़ गया कि कमाल ने त्यागपत्र दे दिया और वह सेना का काम त्यागकर अपनी माता और बहिन के पास कुस्तुन-तुनिया में आकर रहने लगा। वह अब भी निरन्तर अनवर और जर्मनों को बुरा-भला कहता रहता था और अनवर के विरोधी अफसरों से मिलकर सलाह-मशविरा किया करता था। इससे डर कर अनवर ने उसे राजकुमार वहेउद्दीन के साथ एक 'मिशन' में शामिल करके जर्मनी की यात्रा के लिये भेज दिया।

जर्मनी की यात्रा से और वहाँ के मुख्य सेनाध्यक्षों से मिलकर कमाल पाशा ने यही निर्णय किया कि इस युद्ध में उनकी अन्तिम विजय नहीं हो सकती। जर्मनी से वापस आने पर वह कई महीने तक बीमार पड़ा रहा। फिर भी जब अँगरेजी सेना का आक्रमण तुर्की के कई प्रदेशों पर जोर से होने लगा और वहाँ की सेनायें हारने लगीं तो वह फिर युद्ध क्षेत्र में पहुँच गया और देश के जितने भाग की रक्षा हो सके उसकी चेष्टा करने लगा। पर अब जर्मनी की शक्ति समाप्त हो चुकी थी और अँगरेज समस्त युद्ध क्षेत्र में अपनी शक्ति बढ़ाते जाते थे, इससे तुर्की की सरकार ने पराजय स्वीकार करके अँग्रेजों से सन्धि करने का निश्चय कर लिया।

अब कमाल भी कुस्तुनतुनिया पहुँचा। इस समय पुरानी सरकार के मुख्य संचालक अनवर तालत तथा जमाल पाशा राजधानी से भाग चुके थे और राजकुमार वहेउद्दीन सुलतान बन कर शासन कर रहा था। पर अब टर्की का समस्त साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो चुका था और वह किसी तरह अँगरेजों से अपनी राजधानी और थोड़े से प्रदेश की रक्षा के प्रार्थी थे। कमाल पाशा अब भी सेना का अधिकार अपने हाथ में लेकर अँगरेजी प्रभाव को बढ़ने से रोक ने को तैयार था। पर सुलतान में इतना साहस न था, इसलिये कमाल को फिर उपेक्षित दशा में ही रहना पड़ा। कुछ समय पश्चात् राजधानी पर भी अँगरेजी तथा फ्रांसीसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सेनाओं ने अधिकार कर लिया। कमाल चूँकि अँगरेजों का विरोधी था, इस लिए इसका नाम खतरनाक लोगों की सूची में लिख लिया गया और उस पर निगरानी रखी जाने लगी।

क्रान्ति का श्रीगणेश—

कुछ समय पश्चात् अनातोलिया में विद्रोह हो गया और कमाल पाशा को इस कार्य के लिये सर्वथा उपयुक्त समझ कर वहाँ की सेना का अधिकारी बना कर भेजा गया। अँगरेज अधिकारियों को उस पर विश्वास न था इसलिये वहाँ भी उन्होंने उसकी निगरानी की व्यवस्था रखी। पर कमाल को इसकी कोई चिन्ता न थी। उसने अनातोलिया में अँगरेजों के खिलाफ प्रचार और तुर्की की स्वाधीनता का आन्दोलन आरम्भ कर दिया। कुछ समय बाद उसने अपने विचार वालों को इकट्ठा करके उनकी एक गुप्त कांफरेंस की। कमाल ने लोगों को समझाया कि "शत्रुतुर्की का नाश करने पर तुला है। सुल्तान अँगरेजों को हाथ में निस्सहाय है, परन्तु तुर्की को स्वयम् अपनी रक्षा करनी चाहिये। उनको नई राष्ट्रीय सेना में भरती होना चाहिये। केवल इसी उपाय से वे अपनी तथा अपने स्त्री-बच्चों की रक्षा कर सकेंगे।" इस समय लोगों की हिम्मतें कई साल तक युद्ध के कष्ट सहने के कारण टूटी हुई थीं तो भी कमाल के लगातार प्रयत्न से उनमें जोश पैदा हो गया और वे शत्रुओं से बदला लेने को तैयार होने लगे।

यद्यपि अँगरेजों ने और उसका साथ देने वाले तुर्कों ने कमाल के प्रभाव को रोकने की बहुत चेष्टा की, पर अब जनता ने उसकी देशभक्ति और राष्ट्र-रक्षा की भावना को भली-भाति समझ लिया था, इससे उसे लगातार सफलता मिलती गई और एक दिन वह आया जब कि वह प्रजातन्त्रवादी दल का प्रमुख नेता बन गया। सुलतान ने उसको राजविद्रोही घोषित कर दिया और यह आज्ञापत्र निकाल दिया गया कि "जो लोग कमाल और उसके साथियों को मारेंगे उनको इस लोक में तथा परलोक में पुरस्कार मिलेगा।"

उस समय यद्यपि कमाल, नाम के लिये एक नई सरकार का अध्यक्ष था, पर उसके पास न तो कोष था न सेना थी। तो भी उसने हिम्मत न हारी और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने नाम से टर्की के स्वतन्त्र होने का आज्ञा-पत्र निकलवा दिया। उसने खुले शब्दों में कहा कि कुस्तुनतुनियाँ की सरकार और उसका अध्यक्ष सुलतान देश को अङ्गरेजों के हाथ में बेच रहे हैं, इसलिये वे राष्ट्र घातक हैं। यद्यपि तुर्की जनता के धर्मान्ध व्यक्ति 'खिलाफत' के नाम पर अब भी सरकार के पक्ष में थे और इसलिये कमाल की जान के लिये हमेशा खतरा था, पर प्रजातन्त्रवादी दल के प्रचार से अब लोगों की आँखें खुलने लगी थीं और वे राष्ट्रीयता की भावना को ग्रहण करते जाते थे। थोड़े ही समय में कुस्तुनतुनिया की पार्लामेंट के अनेक सदस्य भी, अंगरेजों के विरोधी बनकर नई सरकार की राजधानी अङ्गारो में चले आये और उन्होंने एक मत से वहाँ पर देश के शासन के लिये 'ग्रांड नेशनल असेम्बली' का निर्माण किया जिसका सभापति कमाल पाशा चुना गया।

पेरिस कान्फरेंस का फैसला—

इसी समय पेरिस में 'शान्ति परिषद' के नाम से प्रेसीडेण्ट विल्सन, लायड-जार्ज, क्लीमेंशो आदि अपने आज्ञा-पत्र निकाल रहे थे। उन्होंने जब तुर्की की इस नई सरकार और उसकी स्वतन्त्रता की घोषणा को सुना तो वे बड़े नाराज हुए और कहने लगे—"यह सब क्या बकवास है? युद्ध में तुर्की परास्त हो चुका है। अब उसका कोई अस्तित्व नहीं रहा।" उन्होंने अपने मन से तुर्की के लिये सन्धि का एक मसौदा तैयार कर दिया। जिसमें अनातोलिया और स्मरना पर तुर्की का अधिकार माना गया, पर उन पर विदेशी अफसरों की पूरी देखभाल रहेगी। उसकी अर्थ व्यवस्था, सेना, टैक्स, पुलिस आदि पर पूरा नियन्त्रण रखा जायगा। यह संधि-पत्र तुर्की के लिये स्पष्ट रूप से गुलामी व शर्तनामा था। इसकी शर्तों को सुनकर सभी तुर्क क्रोध से भर गये, क्योंकि वे पाँच सौ वर्ष से स्वतन्त्र रहते आये थे और अब अपनी स्वाधीनता को ऐसे सहज में नहीं छोड़ सकते थे।

इस नई परिस्थिति में तुर्क लोगों की निगाह सबसे अधिक कमाल की तरफ ही जाने लगी। अन्य नेता तो अब तक तरह-तरह के रङ्ग बदल चुके थे और जहाँ स्वार्थ पूरा होता देखते उसी तरफ लुढ़क जाते थे, पर कमाल निरन्तर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तुर्की राष्ट्र की स्वतन्त्रता और अखण्डता का समर्थन नहीं करता आया था अब सर्वसाधारण ने उसकी इस विशेषता को पहिचाना और इसलिए उसकी शक्ति और सत्ता दिन पर दिन बढ़ती गई। राष्ट्र संघ के इशारे पर यूनानियों ने तुर्की पर आक्रमण किया, गृह-युद्ध भी छिड़ गया, सुलतान भी उसके विरुद्ध 'फर्मान' निकालता रहा, पर वह अपने निश्चय पर दृढ़ रहा और परिस्थिति के अनुसार अपने लक्ष्य की तरफ कभी धीरे-धीरे और कभी तेजी से अग्रसर होता रहा। अन्त में वह अपने बाहरी और भीतरी समस्त विरोधियों को हराकर तुर्की का निर्विरोध शासक बन गया।

धर्मान्ध मौलवी मुल्लाओं ने फिर उसका विरोध करने की कोशिश की, क्योंकि धार्मिक और सामाजिक मामलों में भी वह पूरा स्वतन्त्र विचारों का और क्रान्तिकारी था। इसलिये जब उसने कमेटी में प्रस्ताव किया कि खिलाफत का सम्बन्ध केवल धार्मिक मामलों से रखा जाय और शासन सम्बन्धी अधिकारों से वह पृथक् हो जाय तो मौलवी लोगों ने बड़ा शोरगुल मचाया। लम्बी दाढ़ी वाले मौलवी लोग एक के बाद एक मंच पर आने लगे और कुरान की आयतों के आधार पर खलीफा की सार्वभौम सत्ता को प्रमाणित करने लगे। मुस्तफा कमाल पहले तो एक कोने में बैठा सुनता रहा। पर कुछ देर बाद वह क्रोध में आकर एक मेज पर खड़ा हो गया और रोषपूर्वक बोला—"हमने शक्ति के द्वारा हकूमत को अपने हाथ में लिया है। धार्मिक सत्ता (खलीफा) को राजनैतिक अधिकार छोड़ने ही पड़ेंगे, चाहे आप लोग इससे सहमत न हों, पर बात यही होगी। केवल कुछ लोगों के सर हमको उड़ाने होंगे।"

कमाल की गर्जना ने सारा दृश्य एक क्षण में बदल दिया। सभापति ने जो स्वयं एक लम्बी दाढ़ी वाला मौलवी था उठकर कहा—"सदस्यो ! गाजी मुस्तफा कमाल ने इस सवाल को एक ऐसे पहलू से पेश किया है, जिस पर हमने गौर नहीं किया था।" बस कमेटी के सब सदस्यों ने प्रस्ताव के पक्ष में राय दे दी और निश्चय कर दिया गया कि सुल्तान वहेद्दीन को तख्त से हटाकर धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्रों को अवश्य अलग-अलग कर दिया जाय।

अब इस प्रस्ताव को 'असेम्बली' (शासन-सभा) के पूरे अधिवेशन में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कानून का रूप देने के लिये पेश किया गया। मुस्तफा कमाल ने देखा कि अधिकांश सदस्यों के मत उसके विरुद्ध थे पर उसने निश्चय कर लिया कि जब तक धार्मिक-तन्त्र और शासन-तन्त्र को अलग न किया जायगा, तब तक तुर्की के बन्धन कट नहीं सकेंगे और यहाँ की जनता कूप मंडूक ही बनी रहेगी। इसलिए असेम्बली के अधिवेशन में उसने अपने साथियों को अपने चारों ओर इकट्ठा कर लिया। वे सब हथियार बन्द थे। जब वोट देने का समय आया तो उन्होंने रिवाल्वर हाथों में ले लिये। कमाल ने धमकी देने के स्वर में कहा—"मुझे निश्चय है असेम्बली मेरे प्रस्ताव से सहमत होगी। केवल हाथ उठाकर वोट देना काफी होगा।"

सभापति ने प्रस्ताव को असेम्बली के सामने मतदान के लिए रखा। कुछ हाथ उसके पक्ष में उठे। सभापति ने घोषित कर दिया—"प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो गया।" कुछ सदस्य विरोध करने को उठे पर उनको बैठा दिया गया। मुस्तफा कमाल का संकेत पाकर सभापति ने अपना निर्णय सुनाया—"तुर्की की 'ग्रांडनेशनल असेम्बली' के सदस्यों की सर्वसम्मति से खिलाफत का अन्त कर दिया गया।" यह कह कर असेम्बली का अधिवेशन समाप्त कर दिया गया और कमाल अपने साथियों से घिरा हुआ वहाँ से चल दिया।

चार-पाँच दिन के भीतर ही राष्ट्रीय सेना के एक मजबूत दल ने कुस्तुनतुनिया पहुँचकर सुल्तान को गद्दी पर से हटा दिया। उसने अँगरेजों से सहायता माँगी। अब कमाल का शासन अच्छी तरह जम चुका था इससे अँगरेज और तो कुछ कर न सके एक अँगरेजी जहाज पर बैठकर के सुल्तान चुपचाप देश से बाहर चला गया। इसके बाद उसके भतीजे अब्दुलमजीद को खलीफा बना दिया गया, परन्तु उसको शासन सम्बन्धी कोई अधिकार नहीं दिया गया। इस प्रकार कमाल ने एक सप्ताह के भीतर एक ऐसी धार्मिक क्रांति करके दिखादी जिसने समस्त तुर्की समाज की काया-पलट कर दी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कमाल पाशा द्वारा की गई तुर्की की सामाजिक और धार्मिक क्रांति का यह पहला चमत्कार था। इसने सिद्ध कर दिया कि शताब्दियों से धार्मिक अन्धविश्वास और अज्ञानान्धकार में पड़ी हुई जनता को समयानुकूल नये मार्ग पर चलाने के लिए कभी जोर-जबर्दस्ती करना भी आवश्यक हो जाता है। आज हमारे देश की रूढ़िग्रस्त जनता के सुधार के लिए भी किसी ऐसे ही उपाय की आवश्यकता प्रतीत होती है।

पर इस प्रकार सुल्तान को हटा देने पर भी कमाल के मार्ग में बड़ी कठिनाइयाँ थीं। देश के राजनीतिक नेता उसे 'डिक्टेटर' के रूप में देखना नहीं चाहते थे और न उसकी आधीनता में रहने को तैयार थे, क्योंकि अपने को उसकी अपेक्षा पुराना और अधिक अनुभवी तथा योग्य मानते थे। यह देखकर कमाल ने एक 'जनता पार्टी' की स्थापना की और गाँव-गाँव में उसकी शाखायें स्थापित कीं, जिनको कई प्रकार के स्थानीय शासन सम्बन्धी अधिकार दिये गये। इन कमेटियों के सदस्य मुख्यतया कमाल के सैनिक और किसान अनुयायी थे। इन कमेटियों की सहायता से उसकी स्थिति देश भर में बहुत मजबूत हो गई और वह अन्य राजनीतिज्ञों का मुकाबला करने को तैयार हो गया।

जब असेम्बली ने उसके कार्यों का विरोध किया तो उसने मन्त्रि-मण्डल से स्तीफा दिलाकर शासन-कार्य को ठप्प करा दिया। असेम्बली ने पारस्परिक दलबन्दियों के कारण शासन की व्यवस्था कर सकने में अपने को असमर्थ पाया तो फिर कमाल से ही नया मन्त्रिमण्डल बनाने की प्रार्थना की। कमाल दो बार प्रार्थना करने पर इस शर्त के साथ असेम्बली भवन में आया कि उसका निर्णय पूरी तरह से स्वीकार कर लिया जायगा। उसने कहा कि हमारी सरकार का विधान ठीक नहीं है। असेम्बली कानून भी बनाती है और उनको जारी भी करती है। इस प्रकार की स्थिति में मंत्री लोग शासन कार्य का सञ्चालन नहीं कर सकते। इसलिये आवश्यकता है कि तुर्की में अन्य योरोपियन देशों के समान प्रजातन्त्र राष्ट्र की स्थापना की जाय जिसका एक प्रेसीडेण्ट चुना जाय।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तुर्की के राजवंश का अन्त

विभाग कुञ्ज, हरिद्वार

कमाल प्रजातन्त्र का प्रेसीडेण्ट बन गया, पर उसके विरोधी नेता भी भीतर ही भीतर अपनी चालें चलते रहे। सारे देश में यह मशहूर हो गया कि कमाल को धर्म में कुछ भी विश्वास नहीं है और इस्लाम धर्म के एक बहुत बड़े आधार 'खिलाफत' को नष्ट कर डालना चाहता है। कमाल की स्त्री पर्दा नहीं करती थी और पुरुषों के से कपड़े पहिन कर चाहे जहाँ घूमती थी, इससे पुराने विचारों के मुसलमान उसे इस्लाम विरोधी मानते थे। इसलिये शासन से हटाये गये नेता नये खलीफा अब्दुल मजीद से मिले और उसको फिर से शासन की बागडोर अपने हाथ में लेने को प्रेरित किया। मौलवी और मुल्ला उसके पहले से ही खिलाफ थे क्योंकि वह उनकी शक्ति को छीनकर योरोपियन ढंग का सामाजिक जीवन प्रचलित करने के पक्ष में था। कमाल अपने विरुद्ध राजनीतिज्ञों और धर्मजीवियों के इस सम्मिलित संगठन को देखकर चिन्तित हुआ और इनको दबाने का कोई उपाय सोचने लगा।

इसी समय संयोगवश हिन्दुस्तानी मुसलमानों के तरफ से आगाखाँ और अमीर अली ने तुर्की सरकार के पास एक पत्र भेजा जिसमें खलीफा की प्रतिष्ठा को कायम रखने का आग्रह किया गया था। कुस्तुनतुनिया के कुछ समाचार पत्रों ने इसे सरकार के पास पहुँचने के पूर्व ही प्रकाशित कर दिया। बस कमाल को एक बहाना मिल गया और उसने आगाखाँ का पुराना इतिहास खोजकर यह प्रचार करना आरम्भ किया कि "आगाखाँ अँगरेजों का खास एजन्ट है। अब अँगरेज प्रत्यक्ष रूप से तुर्की को नहीं दबा सकते तो वे हिन्दुस्तानी मुसलमानों और आगाखाँ की सहायता से हमारे राष्ट्र में फूट उत्पन्न करना चाहते हैं और इसके लिये खलीफा को भड़का रहे हैं।"

मुस्तफा कमाल की यह चाल कारगर हो गई और अँगरेजों की नीयत पर सन्देह करके तुर्की के सब राष्ट्रवादी और देशभक्त एक हो गये। मुस्तफा कमाल ने अपने विरोधी अखबारों पर जिन्होंने आगाखाँ का पत्र छापा था मुकदमा चलवा दिया। साथ ही अपने पक्ष के पत्रों द्वारा उसने बड़े जोरों से यह प्रोपैगैण्डा कराया कि सुल्तान अब्दुलमजीद अँगरेजों से मिल गया है और इस-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिये वह देशद्रोही है। इससे प्रभावित होकर लोगों को यह विश्वास हो गया कि उनके देश की स्वाधीनता खतरे में है और कमाल ही विदेशियों के षड़यन्त्रों से उसकी रक्षा कर सकता है।

इस तरह अपनी स्थिति को मजबूत करके उसने अपने विरोधियों को दबाना आरम्भ किया। उसी रात को उसने एक विरोधी को कत्ल करवा दिया और दूसरे को बुलाकर धमकी दी कि अगर वह उसके विरुद्ध भाषण करेगा तो इसी प्रकार कत्ल करा दिया जायगा। एक सैनिक अधिकारी जो खलीफा के पक्ष में था उसको भी बुलाकर मारने का भय दिखाया और उससे वचन ले लिया कि वह प्रजातन्त्र और प्रेसीडेण्ट का विरोध नहीं करेगा। इस प्रकार विरोधी-दल में आतङ्क पैदा करके उसने ३ मार्च, १९२४ को असेम्बली में 'खलीफा' की पदवी को पूर्णतया हटाने के लिये एक बिल पेश किया। उसने भाषण करते हुए कहा—"हमको अपने प्रजातन्त्र की सब तरह से रक्षा करनी चाहिये, क्योंकि वह खतरे में है। तुर्की सरकार (ओटोमन साम्राज्य) का पुराना ढाँचा बहुत खराब था, क्योंकि वह धार्मिक नीति पर टिका हुआ था। अब खलीफा को हटाना आवश्यक है। पुराने ढङ्ग की अदालतों के स्थान पर नये कानून जारी करने चाहिये जिससे सबको न्याय मिल सके। मौलवियों के मदरसों की जगह सरकारी स्कूल बनने चाहिये। राष्ट्र और धर्म को एक-दूसरे से अलग करना बहुत जरूरी है।"

यह बिल बिना बहस के पास हो गया। एक ही बार में कमाल ने पुराने ढर्रे के राजनीतिक और सामाजिक सङ्गठन की जड़ काट डाली। उसी रात को उसने स्तम्बूल के गवर्नर को आदेश भेजा कि खलीफा अब्दुल मजीद को देश से बाहर निकाल दिया जाय। गवर्नर ने आधी रात को ही खलीफा को जहाज में बैठाकर स्वीटजरलैण्ड भेज दिया। दो दिन बाद सब शहजादे और शहजादियों को भी उसके पास रवाना कर दिया गया। समस्त तुर्की में किसी ने इस असम्भव समझे जाने वाले परिवर्तन का विरोध नहीं किया। कमाल ने बिना किसी तरह के रक्तपात के एक प्राचीन राजवंश की सत्ता समाप्त कर दी। जब भारत के अन्धविश्वासी मुसलमानों ने इस घटना पर हाय-तोबा मचाई और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस्लाम की दुहाई दी तो मुस्तफा कमाल ने उनको फटकार कर कह दिया कि वे पहले अपने घर को सँभालें, तुर्की अपने नव-निर्माण में उनसे किसी तरह की सलाह लेना नहीं चाहता।

सामाजिक प्रथाओं में परिवर्तन—

इस प्रकार शक्ति के आधार पर कमाल तुर्की का 'डिक्टेटर' बन गया और उसने सम्पूर्ण सत्ता अपने हाथ में ले ली। पर वर्षों के युद्ध और आन्तरिक कलह के कारण देश की आर्थिक दशा बहुत खराब हो गई थी और सर्वसाधारण का जीवन बड़ा कष्टपूर्ण हो गया था। इस बहाने को लेकर कमाल के विरोधी जनता को भड़काने लगे कि सरकार तुम्हारे वास्ते तो कुछ करती नहीं, तमाम खर्च सेना के लिये ही कर रही है। इस आक्षेप में कुछ सचाई भी थी, क्योंकि कमाल के सब साथी फौजी आदमी ही थे और आर्थिक तथा उद्योग-धन्धों के विषय में वे बहुत कम समझते थे। इस परिस्थिति में कमाल ने टैक्सों में कमी करके लोगों को कुछ सुविधा देने का प्रयत्न किया। साथ ही उसने तुर्की के नवीनीकरण का भी निश्चय किया, क्योंकि पुराने ढर्रे पर चलते हुए देश की हालत का ज्यादा सुधर सकना सम्भव न था। इसके लिये उसने जनता को शिक्षित करना चाहा, पर लोगों में इसके लिये भी उत्साह दिखाई नहीं दिया। कमाल ने समझ लिया कि जब तक जनता में जागृति उत्पन्न नहीं की जायगी तब तक राष्ट्र को प्रगति-मार्ग पर अग्रसर करने का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता।

बस कमाल ने तुर्की की विचारधारा को ही बदलने का निश्चय कर लिया। प्राचीन विचार, स्वभाव, वस्त्र, आचार-विचार, व्यवहार, रहन-सहन सभी को बदलना आवश्यक था। मनुष्य का जीवन एक समग्र इकाई है। उसका एक पहलू गिरा रहना और दूसरे पहलू का ऊँचा उठ जाना अस्वाभाविक और असम्भव है। कमाल समझता था कि यह कार्य बहुत कठिन है और अधिकांश जनता इसका विरोध करेगी। इसलिये उसने यह परिवर्तन बहुत युक्ति से आरम्भ करने का निश्चय किया। सबसे पहले उसने तुर्की टोपी पहिनने का रिवाज बन्द किया। फिर उसने घोषणा कर दी कि "मजहब की मदद से शासन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करना राष्ट्र की कमजोरी का चिह्न है। मजहब एक जाती मामला है। प्रजातन्त्र राष्ट्र का हर एक आदमी अपना मजहब अपनी पसन्द के माफिक चुन सकता है।" उसने मस्जिदों दरगाहों तथा अन्य धार्मिक संस्थाओं को राज्य से सहायता देना बन्द कर दिया और उनकी जायदादें जब्त कर लीं।

अब वह नवीन ज्ञान के आधार पर तुर्की राष्ट्र का निर्माण करने लगा। उसने योरोप के कितने ही विशेषज्ञों को बुलाया—तुर्की के पुराने कानूनों को बिल्कुल हटाकर जर्मनी के व्यापारिक, इटली के फौजदारी और स्विटजरलैण्ड के दीवानी कानूनों का प्रचार किया गया। तुर्की भाषा मे से अरबी और फारसी के शब्दों को निकलवा दिया। कुरान का तुर्की में अनुवाद कराके उसी को पढ़ने की आज्ञा दी। मसजिदों में नमाज भी तुर्की भाषा में पढ़ी जाने लगी। स्कूल, कालेज, दफ्तर, औद्योगिक संस्थान सर्वत्र तुर्की भाषा का प्रयोग अनिवार्य कर दिया गया।

फिर उसने तुर्की भाषा की लिपि का सुधार करने का निश्चय किया। अभी तक वह अरबी अक्षरों में लिखी जाती थी। पर अरबी वर्णमाला बहुत कठिन थी और इस कारण तुर्की में शिक्षित व्यक्तियों की संख्या बहुत कम थी। मुस्तफा कमाल ने स्वयं तुर्की भाषा को लैटिन लिपि में लिखने की योजना बनाई और एक बहुत बड़ी सभा करके लोगों को उसके लाभ समझाये। उसने कुछ लोगों को स्वयं तुर्की भाषा को नई लिपि में लिखने की विधि समझाई। इस कार्य में उसे पर्याप्त सफलता मिली। लोगों ने इस परिवर्तन को पसन्द किया और उसका प्रचार बढ़ने लगा। मुस्तफा कमाल स्वयं लोगों को नई लिपि की शिक्षा देता था और जो लोग परीक्षा में पास होते थे उनको इनाम भी दिया जाता था। कैदियों के लिये हुक्म दिया गया कि जब तक वे नई लिपि को सीख न लेंगे तब तक उनको रिहा न किया जायगा। इस कार्य के लिये उसने समस्त देश में भ्रमण किया और लोगों ने सर्वत्र उसकी समाज-सेवाओं के लिये उसकी सराहना की।

अनेक प्रकार के सुधार कार्य—

अब कमाल ने निश्चय कर लिया कि उसका जीवन तुर्की को एक सबल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और सुदृढ़ राष्ट्र बनाने के लिये ही है और इस काम में चाहे जितनी कठिनाइयाँ और खतरे आवें वह अपने देश को जो इस समय पिछड़ी हुई दशा में पड़ा है, योरोप के अन्य प्रगतिशील देशों के मुकाबले खड़ा हो सकने योग्य बनाकर रहेगा। इसके लिये निरन्तर वहाँ हर तरह के सामाजिक सुधार करने का प्रयत्न करता रहा। भाषा के सुधार के पश्चात् उसने स्त्रियों की स्वाधीनता की समस्या को हाथ में लिया। वह अच्छी तरह समझता था कि मुस्लिम देशों में पर्दा और हरम प्रथाओं के कारण ही वहाँ के समाज अप्रगतिशील बने हुए हैं। इसलिये उसने तुर्की की स्त्रियों को पर्दा त्यागकर सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने को प्रोत्साहित किया। उसने उनको जनता पार्टी की कमेटियों का सदस्य बनाया। स्त्रियाँ डाक्टर और वकील का धन्धा करने लगीं। दो स्त्रियों को जज का पद दिया गया। स्त्रियाँ म्युनिसपैलिटी के चुनावों में भी भाग लेने लगीं। कमाल पाशा द्वारा किये गये सुधारों का ही नतीजा है कि अब तुर्की में से हानिकारक पर्दा-प्रथा सर्वथा खत्म हो गई है और स्त्रियाँ प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों की ही तरह प्रगति कर रही हैं।

और भी अनेक छोटे-बड़े सुधार कमाल पाशा ने किये। मुसलमानी धर्मशास्त्र के अनुसार मुल्लाओं ने तुर्की में मानवीय शरीर की तसवीर या मूर्ति बनाने को धर्म-विरुद्ध बतलाकर निषिद्ध कर रखा था। चित्रकारी और सङ्गीत जैसी कलाओं की भी वहाँ मनाही थी। ऐसे मूर्खतापूर्ण नियमों के कारण वहाँ की सामान्य जनता का जीवन 'साहित्य-कला-विहीन' अर्द्धसभ्य जातियों की तरह हो रहा था। कमाल ने अपनी कई मूर्तियाँ बनवाईं। अंगोरा में चित्रकला सिखाने वाला एक स्कूल कायम किया गया। उसने सङ्गीत और नृत्यकला का प्रचार भी तुर्की में हो सकने की व्यवस्था की।

अभी तक तुर्की में साप्ताहिक छुट्टी का कोई खास दिन नियत न था। मुसलमान शुक्र के दिन कारबार बन्द रखते थे और यहूदी शनिवार तथा ईसाई इतवार को विश्राम का दिन मानते थे। कमाल को एक देश के भीतर यह विभिन्नता बुरी जान पड़ी और उसने सर्वत्र शुक्रवार को छुट्टी का दिन नियत कर दिया। तीन बार झुक-झुक कर सलाम करने की प्रथा उठा दी गई और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

केवल टोप उतार कर सलाम करना और हाथ मिलाकर अभिवादन करना पर्याप्त मान लिया गया। पहले घण्टों की गिनती सुबह से की जाती थी पर अब संसार के अन्य देशों की तरह रात के बारह बजे से नये दिन की गिनती की जाने लगी।

उस समय तक तुर्की में भीख माँगने का रिवाज था और भारत की तरह वहाँ भी सड़कों और सार्वजनिक स्थानों पर भिखारियों के झुण्ड दिखाई पड़ा करते थे। नई सरकार की आज्ञा से भीख माँगना रोका गया और भिखारियों को सार्वजनिक स्थानों से हटा दिया गया। पागल तथा विकृत-अङ्ग—लँगड़े, लूले, काने आदि व्यक्तियों पर हँसना अपराध माना जाने लगा। विवाह के पहले वर-वधू के अच्छे स्वास्थ्य का डाक्टरी प्रमाण-पत्र पेश करने का नियम बनाया गया जिससे जनता के शारीरिक विकास में सहायता मिले और रोगी तथा दूषित शरीर-सम्पत्ति वालों की संख्या घटती चली जाय। कमाल पाशा ने विवाह को धर्म की क्रिया मानने के बजाय एक सामाजिक प्रथा घोषित कर दिया, जिसका उद्देश्य स्वस्थ और कार्यक्षम नागरिक उत्पन्न करना था।

इस तरह कमाल पाशा ने दस-पन्द्रह वर्ष तक नवीन तुर्की के निर्माण के लिये तरह-तरह के समयानुकूल परिवर्तन किये और उसे राजनैतिक, आर्थिक, सैनिक दृष्टि से एक सबल राष्ट्र बनाने की कोशिश की जिससे वह संसार के अन्य प्रगति शील राष्ट्रों के मुकाबले में ठहर सके। उसने विदेशी माल पर मतसूल बढ़ाकर देश के उद्योग-धन्धों की वृद्धि की। समस्त देश में बिजली के उत्पादन की व्यवस्था की और विदेशी व्यापार की सुविधा के लिये एक जहाजी बेड़ा भी तैयार कराया।

मुस्तका कमाल के इन सब प्रयत्नों और सुधार-योजनाओं से तुर्की की काया-पलट हो गई और तुर्की का पुराने ढङ्ग का आधा नङ्गा और अभावग्रस्त किसान आधुनिक राष्ट्रों के सुखी और सन्तुष्ट नागरिक के रूप में बदल गया। अब तुर्की जनता ने कमाल के इन सब उपकारों के महत्त्व को समझा और सच्चे हृदय से उसके आदेशों का पालन करके राष्ट्र-निर्माण के कार्यक्रम को सफल बनाने में पूरा सहयोग दिया। अब कमाल एक विद्रोही अथवा आन्दोलनकारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के बजाय राष्ट्र का महान निर्माणकर्ता माना जाता था और लोग उसे "अता-तुर्क" (तुर्की का पिता) के नाम से पुकारने लगे थे ।

नवम्बर सन् १९३८ में अतातुर्क कमाल का देहावसान हो गया । मरने से पहले उसने अपने राष्ट्र को सब प्रकार से स्वतन्त्र और सुरक्षित देख लिया । संसार के बड़े-बड़े राष्ट्र—अमरीका, रूस, इङ्गलैण्ड, फ्राँस आदि उसे सम्मान की दृष्टि से देखते थे और उसके साथ संधि करके घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करते थे । यद्यपि उसका व्यक्तिगत जीवन सदैव एक फौजी आदमी की तरह रहा और अपने खान-पान तथा भोजन विलास में उसने कभी कोई खास नियन्त्रण नहीं लगाया, पर उसने अपनी समस्त शक्ति का उपयोग देश, समाज और राष्ट्रवासियों के उद्धार तथा प्रगति के लिये ही किया । इसलिये तुर्की ही नहीं वरन् संसार के अन्य लोगों ने भी उसे एक महान पुरुष स्वीकार किया । निस्संदेह तुर्की राष्ट्र के लिये वह एक युग-निर्माण व्यक्ति था । उसने केवल राजनीतिक दृष्टि से ही नष्ट-भ्रष्ट होते हुए तुर्की की रक्षा नहीं की वरन् सामाजिक संगठन, शिक्षा, अर्थ व्यवस्था आदि सब विषयों में उसकी काया-पलट करके उसे नवजीवन ही प्रदान कर दिया । इसके लिये तुर्की का प्रत्येक नागरिक आगामी सैकड़ों वर्षों तक उसे स्मरण करता रहेगा ।

महापुरुषों की अनेक श्रेणियाँ होती हैं । जिस दृष्टिकोण से हम महात्मा-गाँधी, अब्राहम लिंकन, बुद्ध और क्राइस्ट (ईसा) को महापुरुष मानते हैं, उससे सिकन्दर, नेपोलियन और कमाल पाशा को महापुरुष नहीं कहा जा सकता । प्रथम श्रेणी के महापुरुषों ने संसार के उपकार के लिये महान कार्य ही नहीं किये वरन् उनका व्यक्तिगत चरित्र भी मनुष्य मात्र के लिए आदर्श रूप था, जिससे शिक्षा ग्रहण करके हम बहुत कुछ आत्मकल्याण कर सकते हैं । पर दूसरी श्रेणी वालों का क्षेत्र सीमित था और उन्होंने जो कुछ किया वह अपने देश के उद्धार और उत्थान के लिये ही किया । साथ ही उनमें चरित्र-सम्बन्धी ऐसी कितनी ही त्रुटियाँ भी पाई जाती थीं जिनका अनुकरण करने की सलाह कोई समझदार व्यक्ति नहीं दे सकता । पर एक बात इन दोनों प्रकार के महा-पुरुषों में समान थी, वह यह कि उन्होंने जो कुछ किया स्वार्थ छोड़कर समाज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अथवा समष्टि के हित के लिए किया। जो कार्य परोपकारार्थ किया जाता है, जिस कष्ट सहन में अपना कोई स्वार्थ न होकर दूसरों की भलाई का लक्ष ही मुख्य होता है, वह तपस्या और परमार्थ का रूप धारण कर लेता है। फिर जब कोई व्यक्ति इस प्रकार के सेवा और परोपकार के कार्य के लिये प्राण देने को प्रस्तुत हो जाता है, अथवा अर्पण कर देता है तो उसको 'महापुरुष' का दर्जा देना हमारा कर्त्तव्य हो जाता है। कमाल पाशा कोई साधु-सन्त या त्यागी, दानी मनुष्य नहीं था पर उनके अपने अत्याचार पीड़ित भाइयों के अधिकारों की रक्षा के लिये अपने प्राणों को उत्सर्ग करने की प्रतिज्ञा करली और अनेक वर्षों तक घोर संघर्ष करके उस प्रतिज्ञा को पूरा कर दिखाया। इस कार्य में उसने न तो कभी प्राणों का मोह किया और न वह किसी प्रलोभन में फँसकर कर्त्तव्य विमुख हुआ। कमाल पाशा का चरित्र सिद्ध करता है कि जो व्यक्ति वास्तव में सेवा-भावना रखते हैं, परोपकार के मार्ग पर चलना चाहते हैं वे प्रत्येक परिस्थिति में बहुत कुछ कर सकते हैं।

हमारे भारतवर्ष की सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियाँ भी बहुत कुछ तुर्की से मिलती-जुलती हैं। जात-पाँत, छुआछूत, सम्प्रदायों की भरमार, भाषाभेद, मन्दिरों और तीर्थों में कुपात्रों को दान, भिक्षा-व्यवसाय मृत्युभोज, विवाह तथा अन्य अनेक संस्कारों में फिजूलखर्ची आदि ऐसी बातें हैं जिनके कारण भारतीय समाज का उत्थान होने में बड़ी बाधायें पड़ रही हैं। यह देखकर यही प्रतीत होता है कि इस देश में भी कमाल जैसे किसी दृढ़ निश्चय तथा मजबूत हाथों वाले शासन का प्रादुर्भाव होने पर ही वास्तविक सुधार हो सकेगा।

मुद्रक—वृन्दावन शर्मा, जनजागरण प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन वृत्तान्त जन आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इस लिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन कथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती है।

युग निर्माण योजना द्वारा विचार क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at.
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org